काव्य सुमन

पाठ्य पुस्तक

Bsc,Bvsc,Msc(Biological Sc)Bs(4)B.O.C&Bsc(Honars)   All Bsc courses

द्वितीय सेमिस्टर/Second Semester

SEP Syllabus-2024

संपादक

प्रो.शाकिरा ख़ानम।

डां.फ़रियाल शेख़

प्रकाशक
प्रसारांग।
बेंगलुरु नगर विश्वविद्यालय
बेंगलुरु--560001

Edit with WPS Office

Kavya Suman: Edited by Prof.Shakira Khanum & Dr.Fariyal shaik published by Prasarang.Bengaluru city University.Bengaluru-5700001

(C) बेंगलुरु नगर विश्वविद्यालय

प्रथम संस्करण -2024

प्रधान संपादक

प्रो.शेखर

प्रकाशक

प्रसारांग
प्रधान संपादक की ओर से
बेंगलुरु नगर विश्वविद्यालय
बेंगलुरु--560001

Edit with WPS Office

भूमिका

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय में 2024-25 शैक्षिक वर्ष से एस.ई.पी-2024 नियम (पद्धति) के अनुसार स्नातक वर्गों के लिएनया पाठ्यक्रम जारी किया जा रहा है।इस पाठ्यक्रम की संरचना ऐसी की गई है कि इसके अध्ययन के पश्चात् हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी यह जान सके कि साहित्य का विश्लेषण और सराहना कैसे किया जाए और दिये गये पाठ को पढ़ने की समझ किस प्रकार विकसित की जाए, ताकि विद्यार्थी भाषा और साहित्य के उद्देश्य से भली-भाँति परिचित हो सके। वाणिज्य के अन्य विषयों के अध्ययन के साथ यह अधिक उपयोगी हैं। एस.ई.पी सेमिस्टर पद्धति के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण किया गया हैं।इस पृष्ठभूमि में हिन्दी अध्ययन-मण्डल ने विभागाध्यक्ष डॉ. शेखर के मार्गदर्शन में पाठ्य-पुस्तक का निर्माण किया है।विश्वास है कि यह गद्य संकलन छात्र समुदाय के लिए अधिक उपयोगी सिद्ध होगा। विश्वविद्यालय की यह शुभेच्छा है कि साहित्य और समाजशास्त्रीय विषयों के लिए भी अधिक उपयोगी और प्रासंगिक लगे। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देनेवालों के प्रति विश्वविद्यालय आभारी है।

प्रो. लिंगराज गांधी
कुलपति
बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरु-560001

Edit with WPS Office

प्रधान संपादक की कलम से......

बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय शैक्षिक क्षेत्र में नए-नए विषयों को अपने अध्ययन की सीमा में ले रहा है। अध्ययन को नई एसईपी-2024 नीति के अनुसार ढ़ालने का प्रयत्न हो रहा है। साहित्यिक विषयों को आज की बदलती परिस्थिति के अनुसार रखने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम को प्रस्तुत किया जा रहा है।एसईपी सेमेस्टर पद्धति के अनुसार स्नातक वर्गों के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा रहा है। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में योग देने वाले संपादकों के प्रति मैं आभारी हूँ। इस नई पाठ्यपुस्तक के निर्माण में कुलपति महोदय प्रोफेसर लिंगराज गांधी जी ने अत्यधिक प्रोत्साहन दिया तदर्थ मैं उनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

इस पाठ्यक्रम को राज्य शिक्षा नीति के ध्येयोद्देश्य को ध्यान में रखते हुए किया गया है। गद्य के विविध आयामों को इस पाठ्य पुस्तक में शामिल किए गए हैं। आशा है की सभी विद्यार्थी गण इससे अवश्य लाभान्वित होंगे।

प्रो. शेखर
अध्यक्ष (बी.ओ.एस)
बेंगलूरु नगर विश्वविद्यालय
बेंगलूरु - 560001

Edit with WPS Office

अनुक्रमणिका

कविता	कवि	पृष्ठ संख्या
(१) रहीमदास के दोहे	रहीमदास	06
(२) मीराबाई के पद	मीराबाई	10
(३) असंभव	रमानाथ अवस्थी	13
(४) पुत्र वियोग	सुभद्रा कुमारी चौहान	15
(५) दुविधा	महादेवी वर्मा	19
(६) अक्का महादेवी के वचन (कन्नड़)	अक्क महादेवी	23
	अनु- प्रो.प्रभाशंकर "प्रेमी"	
(७) परशुराम का संदेश	रामधारी सिंह 'दिनकर'	28
(८) हम भी भारतीय हैं	कन्नड़- लक्ष्मण (माळ्विका)	33
	अनु--डां.प्रभु उपासे	
९) ड़र लग रहा है (कन्नड़)	एस.जी.सिद्धरामय्या	37
	अनु-डां.देवराज	
(१०) माँ के लिए ससुराल जाने से पहले	निर्मला पुतुल	40

Edit with WPS Office

रहीमदास का परिचय

रहीम का जन्म लाहौर में सन् 1556 ई. को हुआ था। पिता वैरम खाँ मुगल बादशाह हुमायूँ के सेनापति और विश्वासपात्र थे। मृत्यु के वक्त उन्होंने अपने पुत्र को अकबर का संरक्षक बना दिया। सुशासन व शौर्य के गुण रहीम को विरासत में मिले थे। इन्हें, तुर्की, अरबी, फारसी और संस्कृत का ज्ञान था। इनका अंतिम जीवन संकटों में बीता। सन् 1627 ई. में इनकी मृत्यु हुई। रहीम का मकबरा दिल्ली में है। रहीमदास ने चार भाषाओं में रचनाएँ की है। दोहावली, बरसैनायिका भेद, रासपंचाध्यायी तथा मदनाष्टक आदि इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ है। इन्होंने नीति, लोक-व्यवह वैराग्य, सत्संग आदि पर कविताएँ लिखे हैं।

Edit with WPS Office

रहीमदास के दोहे

1. रहिमन मन की भूल, सेवा करत करील की।

इनतें चाहत फूल। जिन डारन फ्ता नहीं ॥

2. वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग ।

बाटन वारे को लगे, ज्यों मेहँदी को रंग ।।

3. संतत-संपति जानि कै, सबको सब कुछ देत ।

दीनबंधु बिन दीन की, को रहीम सुधि लेत ॥

4. समय पाय फल होत है, समय पाय झरि जात।

सदा रहै नहीं एक सी, का रहीम पछितात ॥

5. रहिमन विद्या वृद्धि नाहिं, नहीं धरम जस दान ।

भू पर जनम वृथा धेरै, पसु बिन पूँछ विषान ।।

6. रहिमन पानी राखिए, बिनु पानी सब सून ।

Edit with WPS Office

पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून ।।

7. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाए।
टूटे से फिर ना जुरे, जुरे गाँठ पड़ जाय ।।

8. बड़े बड़ाई ना करें, बड़े न बोलें बोल ।
रहिमन हीरा कब कहे लाख टका है मोल ॥

9. तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति -संचाईं सुजान ।।

10. गरज आपनी आप सों, रहिमन कही न जाय ।
जैसे कुल की कुलवधू, पर घर जात लजाय ॥

******

Edit with WPS Office

भावार्थ

1. कँटीले करील की सेवा छलावा है जिसकी डाली पर पत्ते तक नहीं होते हैं उससे फल और फूल की कामना भी व्यर्थ होती है।

2. वे लोग धन्य हैं, जिनका अंग-प्रत्यंग परोपकार में लगा है। परोपकार से प्राप्त संतोष उनका पुरस्कार होता है जैसे मेहंदी पीसने वाले को रंग से पुरस्कृत करती है।

3 धनी लोगों की सहायता हर कोई इसीलिए करते है ताकि अवसर पड़ने पर वे उनके काम आ सके। पर समाज में दीन-दुखियों की मदद केवल ईश्वर करते है।

4. समय पर वृक्ष फूलों से भर जाते है और समय पर झड जाते हैं। समय सदा एक सा नहीं रहता। आशावादी होकर हमें परिस्थितियों का साम करना चाहिए।

5. जो लोग विद्या, बुद्धि, धर्म-कर्म, यश, दान आदि गुणों से रिक्त हैं,वे सींग एवं पूँछ रहित पशु के समान पृथ्वी पर बोझ हैं। उनका जीवन व्यर्थ हो जाता है।

6. हमें पानी यानि मान-प्रतिष्ठा पर आँच नहीं चाहिए आने देना चाहि क्योंकि उसके अभाव में जीवन मृत्यु तुल्य हो जाता है। जैसे पानी के अभाव में मोती की चमक दमक खो जाती है।

7 प्रेम धागा या प्रेम का बंधन बहुत नाज़ुक होता है। इसका निर्वहन बड़े सावधानी पूर्वक करना चाहिए क्योंकि ज़रा सी ठेम लगने से यह चटककर टूट जाता है। इसमें गाँठ पड़ने पर सदैव उस टूटन का स्मरण हो आता है।

8. बड़े लोगों का स्वभाव होता है कि वे अपने मुह से अपनी बड़ाई कभी नहीं करते। हीरा कभी अपने मुँह से नहीं कहता कि उसकी कीमत लाख रुपए है।

9.जिस प्रकार वृक्ष स्वंय अपना फल नहीं खाता और सरोवर स्वंय अपना पानी नहीं पीता, उसी प्रकार सज्जन पुरुष परमार्थ के लिए धन-दौलत का संग्रह करते हैं।

10. स्वाभिमानी लोग अपनी ज़रूरत के लिए सगे-संबंधियों के सामने भी हाथ नहीं फैलाते जैसे घर की बहु पड़ोसियों के यहाँ जाने में शरमाती है। यानि याचना से बेहतर यह है कि स्वंय ही आगे बढ़कर याचक की सहायता कर दी जाए।

₹###########

Edit with WPS Office

मीराबाई का परिचय

मीराबाई का जन्म सन् 1498 ई. में पाली के कुड़की गाँव में हुआ था। मीरा का विवाह मेवाड़ के सिसोदिया रोहिया राज परिवार में हुआ। चित्तौड़गढ़ के महाराजा भोजराज इनके पति थे जो मेवाड के महाराणा सांगा के पुत्र थे। पति की मृत्यु सन् 1521ई में हुई। बचपन से ही मीरा कृष्णाभक्ति में लीन थी और विधवा हो जाने के बाद बाकी का जीवन कृष्णभक्ति में ही बीता। मीराबाई की लोकप्रिय रचनाओं में "पायोजी मैंने राम रतन धन पायो है। विद्वानों द्वारा संकलित मीराबाई की रचनाएँ- राग गोविंद गोविंद टीका, राग सोरठा, नरसी जी रो मोहरी, फुटकर पद आदि है। मीराबाई की मृत्यु सन् 1547 ई. में हुई।

मीरा के पद

(1) जगमाँ जीवणा भोड़ा कुणे लयाँ भवसार ।
मात-पिता जग जन्म दियाँ री करम दियाँ करतार ।
खायाँ खरचों जीवण जावाँ, कोई कर् या उपकार ।
साधो संगत हरिगुण गास्था और णा म्हारी लाए ।
मीरा रे प्रभु गिरधरनागर, थे बल उत्तरया पार ।।

Edit with WPS Office

२) माई मेरो मोहने मन हरयो।

कहा करूँ कित जाऊँ सजनी, प्रान पुरुष सूँ बरयो ।

हूँ जल भने जात थी सनजी। कलस माथे करयो।

लोक साज विसरि डारी,तबहीं कारज सरयो ।

दासि मीरा लाल गिरधर, छान ये वर बरयो ।।

3) मैं तो गिरधर के घर जाऊँ ।

गिरधर, म्हाँरो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ।

रैणे पड़ैतब ही उठि जाऊँ, भोर गये रूप उठिए आऊँ ।

रैणादिना वाके ससेंग खेलूँ, ज्यूँ-त्यूँ वाहि रिझाऊँ ।

जो पहिरावै होई पहिरुँ जो दे सोई खाऊँ।

मेरी उणकी प्रीत पुरानी, उण बिन पल न रहाऊँ।

जहाँ बैठावे तितही बैठूँ, बेचे तो बि जाऊँ ।

मीरा रे प्रभु गिरधरनागर, बार बार बलि जाऊँ ।

Edit with WPS Office

भावार्थ

11 संसार में जो कुछ प्राप्त होता है वह क्षणिक होता है। भवसागर, रूपी संसार में मद, लोभ, काम, अहंकार, आदि विकारों में फंस कर जीवन को नष्ट क्यों करें? माता-पिता ने जन्म दिया है पर कर्म ईश्वर द्वारा निर्धारित किए गए है। परोपकार व ईश्वर-प्राप्ति ही जीवन का सार है। मीराबाई साधु-संतों की संगत, हरि-गुण-गान एवं शक्ति से भवसागर पार करना चाहतीं हैं।

२) माँ और सखी को सम्बोधित कर मीराबाई कहती है कि उनके प्राण, कृष्ण में अटके हुए है। ना जाने कैसा जादू-टोना उन पर कर दिया है कि वह लोक-लॉज भूला चुकीं हैं। संसार से नाता तोडने पर हरि की प्राप्ति होती है। मीरा कहती है कि उन्होंने कृष्ण को वर के रूप में स्वीकार कर लिया है।

मीरा कहती हैं कि गिरधर, उनके सच्चे प्रियतम हैं। वे उन्हें देख मोहित हो जाती है। वे दिन-रात उनके साथ रहती, खेलती व उन्हें रिझाने का प्रयत्न करती है। उनका दिया पहनती व खाती है, जहाँ वे बिठाते है वहाँ बैठती है, उनके बिना एक पल नहीं रह सकती। अगर वे उसे बेच भी दे तो मुस्कुराते हुए बिक जाएगी। वह गिरधर- नगर पर बार-बार बलिहारी जाती है।

########

Edit with WPS Office

असंभव

रमानाथ अवस्थी

कवि परिचय

रमानाथ अवस्थी का जन्म 1926 में फतेहपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ था। वह आकाशवाणी से बतौर • प्रोड्यूसर लंबे समय तक जुड़े रहे थे और एक गीतकार के रूप में विशिष्ट पहचान रखते है। सुमन-सौरभ, आग और पराग, राख और शहनाई तथा बंद न करना द्वार इनकी मुख्य काव्य-कृतियाँ है। ये लोकप्रिय गीतकार हैं। इन्हें उत्तर प्रदेश सरकार ने पुरस्कृत किया है। इनका निधन २१ जून 2002 में हुआ।सूरज सुबह आए वहीं, औ शाम की जाए नहीं। तर को न दे चुम्बन सहर औ' मृत्यु को मिल जाए स्वर।

******

असम्भव

कविता

ऐसा कहीं होता नहीं

ऐसा कभी होगा नहीं।

धरती जले बरसे न घन,

मुलगे चिता झुलसे न तन।

औ जिंदगी में हों न ग़म।

Edit with WPS Office

ऐसा कभी होगा नहीं

ऐसा कभी होता नहीं।

हर नींद हो सपनों भरी,

डूबे न यौवन की तरी,

हरदम जिए हर आदमी,

उसमें न ही कोई कमी।

ऐसा कभी होगा नहीं,

ऐसा कभी होता नहीं।

सूरज सुबह आए नहीं,

औ शाम को जाए नहीं।

तट को न दे चुम्बन लहर

औ' मृत्यु को मिल जाए स्वर।

ऐसा कहीं होता नहीं

ऐसा कभी होगा नहीं।

दुख के बिना जीवन कटे,

सुख से किसी का मन हटे।

पर्वत गिरे टूटे न कन् ।

औ' प्यार बिन जी जाए मन।

ऐसा कभी होगा नहीं।

ऐसा कभी होता नहीं।

Edit with WPS Office

कवि परिचय

सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म इलाहाबाद के निकट निहालपुर नामक गाँव में हुआ था। हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री व लेखिका हैं। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई (कविता) उनकी प्रसिद्ध कविता है। स्वाधीनता संग्राम में अनेक बार जेल यातनाएं सहने के पश्चात् उन्होंने अपनी अनुभूतियों को कहानी में व्यक्त किया है। इनकी पुत्री सुधा चौहान ने 'मिला तेज से तेज' नामक पुस्तक में सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी लिखी है। बिखरे मोती उनका पहला कहानी संग्रह है। उन्मादिनी, सीधे-साधे चित्र (कहानी संग्रह मुकुल, त्रिधारा (कविता संग्रह) कदम्ब का पेड, सभा का खेल (बाल-साहित्य) है। उन्हें सेकसरिया पारितोषिक, 'मुकुल' (कविता संग्रह, 1931) और बिखरे मोती' (कहानी संग्रह, 1932) को प्राप्त हुआ। भारतीय डाकतार विभाग ने 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक टिकट जारी किया है। भारतीय तटरक्षक सेना ने 2006 को सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्रप्रेम की भावना को सम्मानित करने के लिए एक तटरक्षक जहाज़ को सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम दिया।

Edit with WPS Office

पुत्र वियोग

कविता

आज दिशाएँ भी हँसती हैं
है उल्लास विश्व पर छाया,
मेरा खोया हुआ खिलौना
अब तक मेरे पास न आया ।

शीत न लग जाए, इस भय से
नहीं गोद से जिसे उतारा
छोड़ काम दौड़ कर आई
'मा' कहकर जिस समय पुकारा ।

थपकी दे दे जिसे सुलाया
जिसके लिए लोरियाँ गाई,
जिसके मुख पर जरा मलिनता
देख आँख में रात बिताई ।

जिसके लिए भूल अपनापन
पत्थर को भी देव बनाया
कहीं नारियल, दूध, बताशे
कहीं चढ़ाकर शीश नवाया ।

Edit with WPS Office

फिर भी कोई कुछ न कर सका
छिन ही गया खिलौना मेरा
मैं असहाय विवश बैठी ही
रही उठ गया छौना मेरा ।

तड़प रहे हैं विकल प्राण ये
मुझको पल भर शांति नहीं है
वह खोया धन पा न सकूँगी
इसमें कुछ भी भ्रांति नहीं है।

फिर भी रोता ही रहता है
नहीं मानता है मन मेरा
बड़ा जटिल नीरस लगता है
सूना सूना जीवन मेरा ।

यह लगता है एक बार यदि
पल भर को उसको पा जाती
जी से लगा प्यार से सर
सहला सहला उसको समझाती ।

Edit with WPS Office

मेरे भैया मेरे बेटे अब
माँ को यों छोड़ न जाना
बड़ा कठिन है बेटा खोकर
माँ को अपना मन समझाना ।

भाई-बहिन भूल सकते हैं
पिता भले ही तुम्हें भुलावे
किंतु रात-दिन की साथिन माँ
कैसे अपना मन समझावे !

****

Edit with WPS Office

(५) दुविधा

महादेवी वर्मा

कवियत्री का परिचय:

महादेवी वर्मा (1907 - 1987) हिन्दी की श्रेष्ठ कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा 'वेदना की मधुर गायिका' के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके प्रायः समस्त साहित्य का लक्ष्य नारी और केंद्रबिंदु करुणा है । कविता के क्षेत्र में प्रकृति सौन्दर्य रहस्यमय सत्ता के साथ प्रणय निवेदन और परदुःख कातरता उनके प्रिय विषय रहे हैं । उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा (काव्यसंग्रह); अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ (रेखाचित्र); मेरा परिवार, पथ के साथी (संस्मरण); क्षणदा, श्रृंखला की कड़ियाँ (आलोचना और निबंध) ।महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य की आधुनिक मीरा के रूप में चिरपरिचित हैं । महादेवी का साहित्यिक जीवन अत्यन्त सफल रहा । 'नीरजा' काव्य संग्रह को सेक्सरिया पुरस्कार तथा 'आधुनिक कवि' को हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा मंगलाप्रसाद पारितोषक प्रदान किया गया था । देश के स्वतन्त्र होने पर श्रीमती वर्मा जी उत्तरप्रदेश धारा-सभा की सदस्या मनोनीत हुई थीं । सन् 1964 में 'भारती परिषद' की ओर से 'महादेवी अभिनन्दन ग्रन्थ' प्रकाशित किया गया था । महादेवी के लोकप्रिय और प्रातिनिधिक कविताओं का संकलन 'यामा' को ज्ञानपीठ पुरस्कार का गौरव प्राप्त हुआ है।इनकी पद्य रचनाओं में मनोवैज्ञानिक चिन्तन क्रम, गंभीर विचार और अनुभूति का गहरा पुट है।

Xxxxxxxxxxxxxxx

Edit with WPS Office

दुविधा

कविता

कह दे माँ क्या अब देखें ।

देखें खिलती कलियाँ या प्यासे सूखे अधरों को,
तेरी चिर यौवन-सुषमा या जर्जर जीवन देखूँ ।

देखें हिमहीरक हँसते हिलते नीले कमलों पर,
या मुरझायी पलकों से झरते आँसू-कण देखूँ ?

सौरभ पी पी कर बहता देखें यह मन्द समीरण,
दुख की घंटें पीती या ठंढो साँसों को देखूँ !

खेलूँ परागमय मधुमय तेरी वसन्त-छाया में,
या झुलसे संतापों से प्राणों का पतझर देखूँ।

मकरन्द-पगी केसर पर जीती मधुपरियाँ ढूँढ़ूँ,
या उरपंजर में कण को तरसे जीवनशुक देखूँ ।

कलियों की घनजाली में छिपती देखूँ लतिकाएँ,

Edit with WPS Office

या दुर्दिन के हाथों में लज्जा की करुणा देखूँ!

बहलाऊँ नव किसलय के- भूले में अलिशिशु तेरे,

पाषाणों में मसले या फूलों से शैशव देखूं!

तेरे असीम आँगन की देखूँ जगमग दीवाली,

या इस निर्जन कोने के बुझते दीपक को देखूँ!

देखूँ विहगों का कलरव धुलता जल की कलकल में,

निस्पन्द पड़ी वीणा से या बिखरे मानस देखूँ।

मृदु रजत रश्मियाँ देखूँ उलझी निद्रा-पंखों में;

या निर्निमेष पलकों में चिन्ता का अभिनय देखूँ!

तुझमें अम्लान हँसी है इसमें अजस्र आँसू-जल;

तेरा वैभव देखूँ या जीवन का क्रंदन देखूँ!

Xxxxxxxxx

Edit with WPS Office

भावार्थ: मनुष्य जीवन के सारे वैभव क्षणभंगुर हैं परन्तु प्रकृति के अनन्त । उसमें अनन्त यौवन, असीम सुषमा और चिर जीवन है। अपने दुखों से घिरा हुआ मानव अपनी निर्धनत्ता देवे या उसका वैभव, अपने जीवन का क्रन्दन सुने या उसका संगीत, यह उलझनें सुलझ नहीं पातीं ।

चिरयौवन = अनन्त यौवन । हिमहीरक हिम रूपी हीरक, ओस के बिदु जो हीरे के कणों के समान चमकते हैं। प्राणों का पतझड़ सब आशा अभिलाषाओं से रिक्त जीवन । मकरंदपगी = मधु में भीगी हुई अतः मधुर । पनवाली = सघन (कलियों का) जाल । जगमग दीवाली = नक्षत्रलोक, जग- मगाता हुआ आकाश । बुझते दीपक अस्तोन्मुख जीवन ।

Xxxxxxxx

Edit with WPS Office

अक्कमहादेवी का परिचय

जन्म: **12**वीं सदी**,** कर्नाटक के उडुतरी गाँव जिला-शिवमोगा। अक्कमहादेवी वीर शैव आंदोलन से जुड़ी एक महत्वपूर्ण कवयित्री थीं। चन्नमल्लिकार्जुन देव (शिव) इनके आराध्य थे। बसवन्ना और अल्लामा प्रभु इनके समकालीन कन्नड़ संत कवि थे। कन्नड़ भाषा में अक्क शब्द का अर्थ बहिन होता है।

अक्कमहादेवी अपूर्व सुंदरी थीं। एक बार वहाँ का स्थानीय राजा इनका अद्भुत अलौकिक सौंदर्य देखकर मुग्ध हो गया तथा इनसे विवाह हेतु इनके परिवार पर दबाव डाला। अक्कमहादेवी ने विवाह के लिए राजा के सामने तीन शर्तें रखीं। विवाह के बाद राजा ने उन शर्तों का पालन नहीं किया, इसलिए महादेवी ने उसी क्षण वस्त्राभूषण तथा राज-परिवार को छोड़ दिया और अपने भगवान की याद में वचनों की रचना की।

*****

अनुवाद - डां.प्रभाशंकर प्रेमी

हिन्दी-कन्नड़ के सुप्रतिष्ठत लेखक अनुवादक श्री. टी. जी प्रभाशंकर प्रेमी का जन्म ७ नई को कर्नाटक के तुमकूर में हुआ। एम.ए. पी-एचडी के बाद बंगलोर विश्वविद्यालय में हिन्दी के अध्यापक नियुक्त हुए, जहां २००२ में अवकाश ग्रहण किया।अनेक विश्वविद्यालयों में बतौर विजिटिंग प्रोफेसर काम किया। दर्जनाधिक विश्वविद्यालयों के आमंत्रण पर राष्ट्रीय व्याख्यान दिए हैं। २५ शोधार्थियों को पी-एचडी उपाधि तथा ३० छात्रों को एम.फित उपाधि इनके निर्देशन में दिए गए।२ दर्जन से अधिक संशोधनपत्र लिखे हैं।उपलब्धियां: ३ कविता संग्रह २ आलोचना पुस्तकें।विभिन्न पाठ्यक्रमों से

Edit with WPS Office

संबंधित 33 पुस्तकों का संपादन किया है। हिन्दी में उनकी चर्चित पुसा है- कन्नड़ और हिन्दी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन (१९३७), आधुनिक हिन्दी कविता पर गांधीवाद का प्रभाव (१९९१), हिन्दी-कन्नड़ साहित्य संपदा (१९८७), हिन्दी-कन्नड़ पारस्परिकता (२०१५), हिंदी में बसव साहित्य (२०११) पद अण्णा (१९८९) श्रेष्ठ जीवनियां (१९८४) आदि अपनी सुदीर्घ साहित्य-साधना के लिए वे अनेक सम्मानों से विभूषित किये गये जिनमें बिहार राष्ट्रभाषा परिषद उप्र हिन्दी संस्थान (लखनऊ), केंद्रीय हिंदी निदेशालय (दिल्ली), भारतीय अनुवाद परिषद (दिल्ली) केंद्रीय हिंदी संस्थान (आगरा), बसव समिति (बंगलोर) आदि के सम्मान प्रमुख हैं। अपनी साहित्य सेवा के लिए वे भारत सरकार द्वारा अमेरिका, कनाता, दक्षिण अफ्रिका आदि देशों की यात्रा पर भी गए। सम्प्रति में हिंदी त्रैमासिक बसव मार्ग का बंगलोर में प्रधान संपादक तथा कर्नाटक राजभाषा (विधायी) आयोग के सदस्य भी है।

ऋऋऋऋऋऋ

अक्क महादेवी के वचन

Edit with WPS Office

(1) छाया न हो तो उस पेड का क्या फा़यदा?

दया न हो तो उस धन का क्या फा़यदा?

दुहता नहीं तो उस गाय का क्या फा़यदा ?

गुण न हो तो उस रूप-सौंदर्य का क्या फा़यदा?

अन्न न हो तो उस नैवेद्य का क्या फा़यदा?

आपका ज्ञान न हो तो मेरे रहने का क्या फा़यदा, चेन्नमल्लिकार्जुन ?

(2) ज्ञान सूर्य सा है। भक्ति ज्ञान किरण सी है।

सूर्य बिना किरणें नहीं। किरणें बिना सूर्य नहीं।

ज्ञान रहित भक्ति। भक्ति रहित ज्ञान कैसा चेन्नमल्लिकार्जुन?

(3)मेरी माया का मद चूर करो।

मेरी काया का तम दूर करो।

मेरे जीव का जंजाल दूर करो।

देव चेन्नमल्लिकार्जुन मुझमें आवृत सांसारिकता के जंजाल से मुक्त करो।

(4) सांप के दांत निकालकर सांप के साथ खेल सकते हैं

तो सांप का साथ अच्छा है।

काया का संग समझोगे तो काया का संग ही अच्छा है।

देह विकार राक्षसी बनने के समान है।

Edit with WPS Office

चेन्नमल्लिकार्जुन, ऐसा न कहो कि जिनपर तुम प्रसन्न हो वे कायविकारवश थे।

(5) मेरा अपना कोई नहीं है मानकर
मेरा तिरस्कार न करो,
कुछ भी करो तुम, मैं डरनेवाली नहीं हूँ ।
सूखे पत्ते खाकर जी लूँगी।
पत्थर पर सोकर गुज़ार लूँगी ।
चेन्नमल्लिकार्जुन देव तुम जितना भी कष्ट दो
यह तन मन अर्पित कर, आपकी हो कर आज़ाद हो जाऊँगी मैं ।

(6) दाने रहित भूसे को पानी सींचने से ओ कब अंकुरित होगा?
अज्ञानियों में आचार होने से
उन्हें उस आचार का सुख कैसे मिलेगा ?
लेपित सुगंध स्थिर रहेगा कैसे ?
मेरे देव चेन्नमल्लिकार्जुन को न समझनेवालों के लिए कोई आचार नहीं है।

Xxxxxxxxxxxx

भावार्थ:

(1) लिंग तत्व का ज्ञान न हो तो इस मानव जन्म का क्या प्रयोजन ? जैसे छाया बिन

Edit with WPS Office

पेड का, दया बिन धन का, दुहता न हो तो उस गाय का, गुण रहित सौंदर्य का और अन्न रहित नैवेद्य का क्या प्रयोजन? इस प्रकार उदाहरण देकर स्पष्ट करती हैं कि चेन्नमल्लिकार्जुन, आपका ज्ञान न हो तो मेरे रहने का अर्थात इसमनुष्य जन्म का क्या प्रयोजन ?

(2)ज्ञान और भक्ति के परस्पर अटूट संबंध बता रही हैं। ज्ञान और भक्ति सूर्य और किरणों के समान हैं। ज्ञान के बिना भक्ति या भक्ति के बिना ज्ञान अपूर्ण है, वे अन्योन्याश्रित हैं। ज्ञान में जो प्रखरता और असीमता है, वह भक्ति में प्रतिफलित है। महादेवी प्रश्न करती हैं कि भक्ति रहित ज्ञान कैसा ?

(3)चेन्नमल्लिकार्जुन देव से प्रार्थना करती हैं कि अपने में जो माया का मद है उसे मिटाओ। काया में अज्ञत है उसे मिटाओ। मेरे जीव में जो जाल है उसे दूर करो और देव से प्रार्थना करती हैं कि मुझे में आवृत् सांसारिकता से मुक्त करो। अक्क की साधना में सांसारि संघर्ष बाधक है। इसलिए अक्क मायाजाल से, लौकिक बंधन से मुक्त होना चाहती हैं।

(4) काया में रहकर कायविकार से कैसे मुक्त हो ? सांप के दांत निकालकर सांप से खेल सकते हैं तो सांप का संग ही अच्छा है। देह विकार राक्षसी के समान है। इसलिए काया विकार रहित हो, तो चेन्नमल्लिकार्जुन के लिए प्रिय है। अतः देव से कहती है जो आपके प्रिय है वे कायविकारी हो नहीं सकते ! यहां पर काया का विश्लेषण अद्भुत है।

******

(७).परशुराम का संदेश रामधारी सिंह 'दिनकर'

Edit with WPS Office

कवि परिचय

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म बिहार प्रांत के मुंगेर जिले के निगरिया ग्राम में 30 सितंबर, 1908 ई. को हुआ था । दिनकर जी का पालन पोषण उनकी माता ने किया । दिनकर जी की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूलों में ही हुई। मैट्रिक की परीक्षा उन्होंने गोकामाघाट के हाईस्कूल से 1928 ई में पास की। 1933 ई. में उन्होंने पटना कॉलेज से बी.ए. की परीक्षा पास की।प्रारंभ से ही 'दिनकर' जी को अपने परिवार की आर्थिक स्थिति संभालने की चिंता थी । 1933 ई. में उन्होंने एक नये हाईस्कूल के प्रधानाचार्य का पद स्वीकार कर लिया । एक वर्ष बाद वे बिहार सरकार की सेवा में सब-रजिस्ट्रार हो गये । 1943 ई. में उनका स्थानान्तरण युद्ध-प्रचार-विभाग में हो गया । 1947 ई. में बिहार सरकार में प्रचार-विभाग उपनिदेशक हुए । 1950 ई. में मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिंदी-विभाग के अध्यक्ष हुए । 1952 ई. में राज्य-सभा के काँग्रेसी सदस्य हो गये । 1933 ई. में आप भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के पद पर नियुक्त हुए । वे भारत सरकार के हिंदी सलाहकार बोर्ड के अध्यक्ष पद पर भी रहे । 1959 ई. में राष्ट्रपति ने आपको 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया । 'उर्वशी' महाकाव्य पर आपको भारतीय ज्ञानपीठ का पुरस्कार 1973 ई. में प्राप्त हुआ। 24 अप्रैल 1974 ई. में मद्रास में हृदय गति रुक जाने से निधन हुआ ।

Xxxx

परशुराम का संदेश

कविता

Edit with WPS Office

वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो,

चट्टानों की छाती से दूध निकालो ।

है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,

पीयूष चन्द्रमाओं को पकड़ निचोड़ो ।

चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे। योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे।

जिसकी बँहि बलमयी, ललाट अरुण है,

भामिनी वही तरुणी, नर वही तरुण है ।

है वही प्रेम जिसकी तरंग उच्छल है,

वारुणी-धार में मिश्रित जहाँ गरल है ।

उद्दाम प्रीति बलिदान-बीज बोती है।तलवार प्रेम से और तेज होती है ।

छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये,

मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये ।

दो बार नहीं यमराज कण्ठ धरता है,

मरता है जो, एक ही बार मरता है ।

तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण घरो रे । जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे ।

स्वातन्त्र्य जाति की जगन, व्यक्ति की धुन है,

बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है ।

नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,

Edit with WPS Office

स्वाधीन जगत् में वही जाति रहती है ।
चीरत्व छोड़, पर का मत चरण गहो रे। जो पड़े आन, खुद ही सब आग सहो रे ।

आँधियों नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छतियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं,
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है ।
पकड़ो अयाल, अन्धड़ पर उछल चढ़ो रे। किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे।

हैं खड़े हिंस्र वृक-व्याघ्र, खड़ा पशुबल है ।
ऊँची मनुष्यता का पथ नहीं सरल है ।
ये हिंस्र साधु पर भी न तरस खाते हैं,
कण्ठी-माला के सहित चया जाते हैं ।
जो वीर काटकर इन्हें पार जाएगा, उत्तुंग श्रृंग पर वही पहुँच पाएगा ।

जो पुरुष भूल शायक, कुठार को, असि को,
पूजता मात्र चिन्तन, विचार को,
मसि को, सत्य का नहीं बहुमान किया करता है,
केवल सपनों का ध्यान किया करता है,
बस में उसके यह लोक न रह जायेगा । है हवा स्वप्न, कर में वह क्यों आयेगा ?

Edit with WPS Office

उपशम को ही जो जाति धर्म कहती है,

शम, दम, विराग को श्रेष्ठ कर्म कहती है,

धूति को प्रहार, क्षान्ति को वर्म कहती है.

अक्रोध, विनय को विजय-मर्म कहती है,

अपमान कौन, वह जिसको नहीं सहेगी ? सब को असीस, सब का बन वास रहेगी ।

ये देश शान्ति के सब से शत्रु प्रबल हैं,

जो बहुत बड़े होने पर भी दुर्बल हैं,

हैं जिनके उचर विशाल, बाँह छोटी हैं,

गोथरे दाँत, पर, जीभ बहुत मोटी है

औरों के पाले को अलज्ज पलते हैं अथवा शेरों पर लदे हुए चलते हैं ।

सिंहों पर अपना अतुल भारत मत डालो,

हाथियों स्वयं अपना तुम बोडा तैमाजो ,

यदि लदे फिरे, यों ही, तो पछताओगे,

शय मात्र आप अपना तुम रह जाओगे,

यह नहीं मात्र अपकीर्ति, अनय की अति है । जानें, कैसे सहती यह दृश्य प्रकृति है।

उद्देश्य जन्म का नहीं कीर्ति या धन है,

सुख नहीं,धर्म भी नहीं, न तो दर्शन है,

विज्ञान, ज्ञान-यल नहीं, न तो चिन्तन है,

Edit with WPS Office

जीवन का अन्तिम ध्येय स्वयं जीवन है ।

सब से स्वतन् यह रस जो अनघ पियेगा, पूरा जीवन केवल यह चीर जियेगा ।

(८) हम भी भारतीय हैं

कन्नड़- लक्ष्मण (मालविका)

कन्नड़ कवि का परिचय। अन--डां.प्रभु उपासे

नाम: लक्ष्मण (मालविका) कनकुंतला।जन्म: 4 दिसंबर, 1985।स्थान: रायचूर: एक

Edit with WPS Office

ओर संस्था के ट्रस्टी ।व्यवसाय: शिक्षक, प्रशिक्षक।शौक: लेखन, समाज सेवा। शैक्षिक योग्यता: बी. ए, बी एड एम. एसडब्ल्यू, एम. फिल.।काम:1) अटेंडियो प्लीज (लिंग-कामुकता-कामुकता) सह-संपादक।2) मेरा मन कविता का संकलन 3) आशा।

अनुवादक-डां.प्रभु उपासे

परिचयः- कर्नाटक के वर्तमान हिंदी साहित्यकारों में विशेषकर अनुवाद क्षेत्र में विशेष नाम डॉ.प्रभु उपासे संप्रति सरकारी महाविद्यालय, चन्नुट्टण, जिला रामनगर में हिंदी प्राध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। कर्नाटक विश्वविद्यालय से एम.ए तथा बेंगलोर विश्वविदायलय से डॉ.टी.जी प्रभाशंकर प्रेमी के मार्गदर्शन में "समकालीन काव्य प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य में दिविक रमेश की काव्य कृतियों का अध्ययन" शोध प्रबंध के लिए पी-एच.डी की उपाधि प्राप्त की। आप ने कर्नाटक मुक्त विश्वविद्यालय, मुक्त गंगोत्री मैसूरु से एम.एड. की उपाधि प्राप्त की है।आपने छत्तीस राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग ले कर शोध-पत्र प्रस्तुत किया है। अनुवाद क्षेत्र तथा 'कर्नाटक में हिंदी के प्रचार व प्रसार'अध्ययन विषय पर यूजिसी द्वारा प्रायोजित माइनर रिसर्च प्रैजेक्ट (20025-2007) पूर्ण किया है। पिछले बत्तीस वर्षों से बसव मार्ग पत्रिका में लेख लिख रहे हैं। इनकी अनूदित कृति "आत्महत्या, समस्याएँ एवं समाधान"के लिए बेंगलूर विश्वविद्यालय द्वारा 2021 वर्ष का लालबहादुर शासत्री अनुवाद पुरस्कार प्राप्त हुआ है। नव काव्य फाउंडेशन द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया है। प्रतिभारत्न-2023, साहित्य रत्न-2024, उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान 2024 उल्लेखनीय हैं।

Edit with WPS Office

###₹####

हम भी भारतीय हैं

कविता

वह हिंदू है

वह मुस्लिम है

मैं ईसाई हूं

तू बौद्ध, जैन आदि

धर्मों से परे

हमारा मानव धर्म है

हम भारतीय हैं।

वह उस जाति का

यह उस जाति का

मैं इस जाति का

की जातियों से परे

हम सब हैं मानव प्रजाति के

हम भारतीय हैं।

वे काले हैं

वह गोरे हैं

मैं भूरा हूँ

Edit with WPS Office

मैं गेहूँ, भूरा, पीला और अन्य

रंगों से परे

हमारा असली रंग है

हम भारतीय हैं।

वह ब्राह्मण है,

यह क्षत्रिय है,

मैं वैश्य हूं

तू शूद्र आदि

हम इस सब से परे

अध्यात्म वर्ग के हैं,

हम भारतीय हैं।

वह पुरुष है,

वह महिला है,

वह यौन अल्पसंख्यक पुरुष है,

वह यौन अल्पसंख्यक महिला है,

हम इन लिंगों से परे

हम आत्म लिंग हैं

और हम भारतीय हैं।

######

Edit with WPS Office

(९) डर लग रहा है - कन्नड़ -एस.जी.सिद्धरामय्या

अनु- डां.देवराज

प्रो.एस.जी सिद्धरामाय्या:-

कन्नड साहित्य के सुप्रतिष्ठित लेखक, कवि, नाटककार श्री प्रो.एस.जी सिद्धरामाय्या का जन्म १९.११.१९४६ को कर्नाटक के तुमकूर में हुआ। एम.ए के बाद सरकारी कॉलेज

Edit with WPS Office

चिक्कनायकनहल्ली में प्राचार्य के रूप में सेवा की। अवकाश ग्रहण करने के बाद कर्नाटक सरकार ने कन्नड पुस्तक प्राधिकार का अध्यक्ष नियुक्त किया।(२००५-२००८) उपरांत कन्नड उन्नति प्राधिकार का अध्यक्ष बनाया गया(२०१५-२०१८)।

उपलब्धियाँ: दो दर्जन कविता संग्रह, पाँच नाटक, दस आलोचना ग्रंथ, एक यात्रा वृत्त आदि । पुरस्कार: कर्नाटक साहित्य अकादमी पुरस्कार, साहित्य सम्मान पुरस्कार, राज्योत्सव पुरस्कार, मास्ति पुरस्कार, पु.ति.ना.पुरस्कार, अम्मा पुरस्कार प्रमुख हैं।

****

डॉ.एन.देवराज-अनुवादक- 30.9.1973

हिन्दी तथा कन्नड के युवा कवि, कहानीकार एवं अनुवादक का जन्म ३०-०९-१९७३ को बेंगलूरु में हुआ।। फिलहाल मोरार्जी देसाई आवासीय पाठशाला, बेंगलूरु में प्रधानाचार्य के रूप में कार्यरत हैं।

उपलब्धियाँ:- दो कविता संकलन (कन्नड), दो आलोचना (हिन्दी से अनूदित), तीन उपन्यास (हिन्दी से अनूदित) , एक नाटक (कन्नड से अनूदित), बीस कहानियों का अनुवाद (कन्नड और हिन्दी में कन्नड के प्रसिद्ध तीस कविताओं का अनुवाद आकाशवाणी, बेंगलूर के लिए(कन्नड और हिन्दी भाषा में) पाँच हिन्दी एकांकी और निबन्धों का अनुवाद, डॉ. बाबू जगजीवनराम अध्ययन और संशोधन केन्द्र, मैसूर विश्ववदियालय , मैसूर के लिए श्रीमति इन्द्राणी देवी जी द्वारा संकलित बाबू जगजीवनराम जी के भाषणों का अनुवाद,

पुरस्कार: 'राष्ट्रीय पुरस्कार','लाल बहादूर शास्त्री''कुवेम्पु स्मारक साहित्य रत्न' 'सावित्री बाई फुले' पुरस्कार, राष्ट्रीय चेतना परिवार 'गुरु द्रोणाचार्य' पुरस्कार प्राप्त हैं। आपके

Edit with WPS Office

साहित्यिक देन को पहचानकर कर्नाटक सरकार ने सन २०१६ से २०१८ तक कुवेंपू भाषा भारती प्राधिकार का सदस्य नियुक्त किया था।

****

डर लग रहा है

कविता

डरलग रहा है मुझे
हावी होनेवाली मृत्यु को लेकर नहीं
गुम हुए मनुष्य को लेकर।
हर दिन द्वेष का तंत्र
गूंथनेवाले षड्यन्त्र को लेकर नहीं
निर्दोषियों के जीवन के बली को लेकर।
बो कर अनाज उगाना न जाननेवाले
भोजन का मूल्य न जानने को लेकर।
पालन-पोषण न कर सकने वाले
जीवन का महत्व न जानने को लेकर
मुझे डर है कि इन धूर्तों ने हमारे

बच्चों को दास-ग़ुलाम बना लिया हो,

Edit with WPS Office

मुझे डर लगरहा है कि हमने अपने बच्चों को
उस मानवता का पाठ पढ़ाना भूल गए हो।
मुझे डर है कि द्वेष का पाठ ही
देशभक्ति बनती जा रही हो।
मुझे कुल्हाडि की तेज़ धार से ही
वृक्ष के नष्ट होने का डर हो रहा है।

मुझे डर है कि रक्षक के भेस में
भक्षक दहाड़ते हुए बाड़ ही खेत को निगल न रहा हो।
मुझे डर है कि कविता मर कर
भाषा दूषित हो रही हो।
मुझे डर है कि झूठ सच का वेश धारण कर
संत वाणी बन रहा हो ।

(१०). माँ के लिए, ससुराल जाने से पहले

निर्मला पुतुलु

कवयित्रि का परिचय

निर्मला पुतुल निर्मला पुतुल बहुचर्चित संताल की लेखिका, कवयित्री और सोशल एक्टिविस्सट हैं। दुमका, संताल परगना (झारखंड) के दुधानी कुरुवा गाँव में जन्मी निर्मला पुतुल हिन्दी कविता में एक परिचित नाम है। उन्होंने राजनीति शास्त्र में ऑनर्स

Edit with WPS Office

और नर्सिंग मे डिप्लोमा किया है। उनकी कविताओं का अनुवाद अंग्रेज़ी, मराठी उर्दू, उड़िया, कन्नड़, नागपुरी, पंजाबी, नेपाली भाषाओं में हो चुका है। पिछले 15 वर्षों से भी अधिक समय से शिक्षा, सामाजिक विकास मानवाधिकार, समग्र उत्थान और आदिवासी महिलाओं के के लिए सेवारत है। इन्हें साहित्य सम्मान 2001, झारखंड सरकार द्वारा 'राजकीय सम्मान' 2006, मुकुट बिहारी सरोज सम्मान 2006, भारत आदिवासी सम्मान 2006, राष्ट्रीय युवा पुरस्कार २००१ आदि प्राप्त हुआ है। इनके जीवन पर आधारि फिल्म 'बुरु-गारा' के लिए 2010 में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्ट हुआ है।

माँ के लिए, ससुराल जाने से पहले

कविता

माँ
चली जाऊँगी एक दिन छोड़कर
तुम्हारा घर आँगन
बरतुहारी जो कर आई हो

Edit with WPS Office

तुम रस्सी में गाँठ-सी
बाँध जो आई हो मेरी शादी की तिथि !

पर क्या सचमुच
जा सकूँगी पूरी की पूरी यहाँ से ?
आँगन में पड़े टूटे झाड़ू-सा
पड़ी रह जाऊँगी कुछ न कुछ यहाँ
बची रह जाऊँगी
पगोहाल में गोबर फेंकने के डलिये में
सटे गोबर की तरह

पानी के खाली घड़े में
भरी रह जाएँगी मेरी यादें
जंगल से लाई लकड़ियों के गट्ठर में बँधी
रस्सी की तरह
बँधी रह जाऊँगी तुमसे

सोचती हैं,
कौन दबाएगा अब तुम्हारे पाँव ?
धके-माँद वापस लौटे बापू को
कौन देगा अगुवाकर लोटा भर पानी ?

Edit with WPS Office

कौन लाएगा जंगल से बीनकर लकड़ियाँ ?

गायों को चराने कौन ले जाएगा?

प्यासा रह जाएगा घड़ा

खूँटे में बँधी बकरियाँ

मिमियाकर बुलाएँगी मुझे

और यह जो लगा रही हूँ पेड़

खिलेंगे एक दिन इसमें फूल

और मुरझा-मुरझाकर गिर जाएँगे

मेरे खोपे की आस में

तब क्या रोओगी नहीं मुझे याद कर ? आधी रात को

बेर गाछ पर बैठे,

पंडुक चिड़िया-सी कू-कू कर कुहुकोगी नहीं

मेरी याद में ?

बड़का भैया तो डूबा रहेगा हड़िया में

छोटका गुलेल लेकर पड़ा रहेगा

चिड़िया-चिरगुन के पीछे बापू भी चला जाएगा खेत

तुम रह जाओगी निपट अकेली घर में

चटाइयाँ बुनती

और ऐसे में जब लगेगी प्यास

Edit with WPS Office

उठना चाहकर उठ नहीं पाओगी

बार-बार निहारोगी घड़े

झाँकोगी इधर-उधर

तब क्या याद नहीं आएगी मेरी ?

कहो न माँ, बाद नहीं आएगी मेरी ?

#######

Edit with WPS Office